आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:17-11-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर मास्टर ज्ञान-सागर बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें एक बाप से ही सुनना है और सून करके दूसरों को सुनाना है.

बाबा की आज की मुरली से आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के ज्ञान के बारे में कहे गये पॉइन्टस को अलग करके लिखेंगे. जिसे हमें यह पॉइन्टस दूसरों को समझाने में मदद मिले.

आत्मा और परमात्मा का ज्ञान के पॉइन्टस ----

१. बाबा हमसे ॐ शान्ति क्यों करते है? यह है आत्मा का परिचय देना. आत्मा का स्वधर्म शान्त है. आत्मा ही आत्मा का परिचय देती है.

२. यह शरीर को चलाने वाली भी आत्मा है. बातचीत आत्मा ही करती है शरीर द्वारा. आत्मा के बिना शरीर कुछ कर नहीं सकता. परमात्मा हमें जो ज्ञान देते है वह भी हम आत्माये ही इस शरीर के अंगों द्वारा ही समझते हैं.

3. तो यह परमात्मा की आत्मा ही अपना परिचय देती है. कहते भी है आत्माये सब परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं. फिर आत्मा ही परमात्मा कैसे हो सकती है?

४. कहते भी है हम आत्माये स्प्रीचुअल फादर के स्प्रीचुअल बच्चे है. तो रुहानी बच्चों को जरूर रुहानी बाप चाहिए. रुहानी बाप और रुहानी बच्चे. सभी रुहानी बच्चों का एक ही रुहानी बाप हैं. वह स्वयं आकर हमें नॉलेज देते हैं.

५. रुहानी बाप कैसे आते है. उन्हें भी प्रकृति (शरीर) का सहारा लेना पड़ता हैं. सब आत्माये शिवबाबा के बच्चे तो है ही. उन्हें बुलाते भी है शिवबाबा, शिवबाबा आओ. जैसे सब आत्माये शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं. तो शिवबाबा भी जरूर शरीर द्वारा पार्ट बजायेंगे ना. शिवबाबा पार्ट न बजावे तो कोई काम का न रहा. उनकी भक्तिमार्ग में महिमा भी तब करते है जब की उन्होंने स्वयं आकर विश्व की सर्व आत्माओं को सद्गति दी हैं. इस कर्तव्य के आधार से ही उनका गायन भी है - सर्व का सद्गति दाता एक है.

सृष्टि चक्र का ज्ञान --

कहते है ज्ञान, भक्ति और वैराग्य. बाबा ने ही हमें समझाया की यह चक्र कैसे चलता है. अभी हम ज्ञान की पढ़ाई पढ़ रहे हैं. फिर सतयुग-त्रेता में हमको ज्ञान की प्रालब्ध मिलती हैं. तो सतयुग-त्रेता में हम आत्माये नेचरल रुप से ज्ञान-स्वरूप यानी निर्विकारी और देही-अभिमानी होकर पार्ट बजाती हैं. सतयुग-त्रेता में जाने से पहले यह ज्ञान लेकर हम आत्माये मुक्तिधाम (बाबा के घर यानी हम आत्माओं का घर) में जाती हैं. मुक्तिधाम में हम आत्माये अपने ऑरिजिनल स्वरूप में हैं तो मुक्तिधाम में कोई पार्ट नहीं बजाते हैं. उस को कहा जाता है विज्ञान. आत्माये ज्ञान से परे शान्तिधाम में चले जाते हैं. फिर वहॉ से सतयुग-त्रेता में अपने अभी की पढ़ाई की प्रालब्ध भोग ने नम्बरवार आते हैं. सतयुग-त्रेता है दिन और द्वापर-कलियुग है रात. इसको ही दूसरे अर्थ में कहे, आधाकल्प है ज्ञान और आधाकल्प है भक्ति. सतयुग-त्रेता में सभी आत्माये, अपने सत्य स्वरूप आत्मा को पहचान कर - देही-अभिमानी रहकर पार्ट बजाती है. द्वापर-कलियुग में सभी आत्माये अपने सत्य स्वरूप आत्मा को भूल, खुद को शरीर समझकर शरीर के भान में रहकर या कहे देह-अभिमान में रहकर पार्ट बजाती हैं. सतयुग-त्रेता में आत्माये, देही-अभिमानी होने के कारण निर्विकारी रहती है. जब की द्वापर-कलियुग में आत्माये, देह-अभिमानी होने के कारण विकारी होती जाती हैं. सतयुग-त्रेता है शिवबाबा की रचना तो उसे राम-राज्य कहा जाता है. द्वापर-कलियुग है रावण की रचना तो उसे कहा जाता है माया-रावण का राज्य. ज्ञान है दिन और भक्ति है रात. अभी जब भक्ति पुरी होती है तो शिवबाबा आते है फिर से दिन में ले जाने. तो फिर हम आत्माओं को भक्ति से वैराग्य कराया जाता है क्योंकि आधाकल्प मनुष्य आत्माये भक्ति करते-करते जन्म-जन्मांतर दुखी ही होती आती हैं. अब इस संगम का एक जन्म हम आत्माये ज्ञान को धारण कर आधाकल्प सम्पूर्ण सुख और शांति को प्राप्त करती हैं.

ॐ शांति.